Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 2, Issue 2 – 2018

नैतिक शिक्षा–एक राष्ट्रीय आवश्यकता

वर्षा चौधरी*, डॉ. दीपक पंचोली**

शोध सार (Abstract)

मनुष्य समाज में रहने वाला एक सामाजिक प्राणी है, सामाज के नियमों, कायदों का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करने वाले मनुष्य को ही मानव कहा जाता है, नही तो वह असभ्य, जंगली और अमानुष कहलाता है, मानव कहलाने के लिए मानवीय गुण होना जरूरी है इन मानवीय गुणों को ही नैतिक मूल्य कहते है, नैतिक मूल्यों का पालन करना आज के युग की प्रथम आवश्यकता है, क्योकि स्वार्थवश होकर मनुष्य एक दुसरे की प्रति भाईचारे की भावना से दूर होता जा रहा है। एकता, सहयोग, भाई–चारे की भावना, ईमानदारी आदि अनेकानेक गुणो को विकसित करने के लिए इन गुणों को अपने जीवन में अपनाने के लिए आज नैतिक शिक्षा हमारे राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता बन गई है।

शब्दकुंजी– राष्ट्रीय, नैतिक शिक्षा, मूल्य।

प्रस्तावना

जब भी मूल्यों की बात होती है कई शब्द अलग अलग संदर्भ में उपयोंग में लाये जाते हैं, जैसे जीवन मूल्य, नैतिक मूल्य और मानवीय मूल्य। संभवतः इन सभी शब्दों के अर्थ और अभिप्राय एक ही है। मूल्य को हम किसी भी नाम से क्यों न पुकारे व उन गुणों की ओर इंगित करते है जिन्हे व्यक्ति महत्वपूर्ण व उपयोगी मानता है तथा जिन मूल्यों कों अपनाने से व्यक्ति अपने लिए सामाजिक मान्यता प्राप्त करता है और इन मूल्यों का प्रयोग करना ही नैतिक शिक्षा है, जिसकी आज बहुत आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन में मूल्य ही सत्य होते है। जीवन की शुद्व क्रियायें धर्म कहलाती है। धर्म में शांति, प्रेम और अंहिसा सम्मलित रहते है। ये पॉच तत्व सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और अंहिसा मानवीय मूल्य माने जाते है। प्राचीन काल से यह भी माना जाता है कि इन मूल्यों का निर्धारण धर्म करता है।

मूल्यों को परिभाषित करना भारतीय चिंतको और दार्शनिकों के लिए एक प्रिय विषय रहा है। अपनी आस्था, परिकल्पना और अवधारणा के आधार पर विद्वानों ने मूल्यों को अलग–अलग परिभाषित किया है। श्री राधाकमल मुकर्जी के अनुसार 'मूल्य समाज द्वारा अनुमोदित उन इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किये जा सकते है, उन्हे अनुबंधन, अधिगम या सामाजिकरण की प्रक्रिया द्वारा आत्मसात किया जाता है और जो व्यक्तिगत मानकों तथा आकांक्षाओं के रूप में परिवर्तित हो जाते है। राधाकमल मुकर्जी ने अपनी इस परिभाषा में मूल्यों को समाज द्वारा अनुमोदित इच्छाओं एवं लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किया है।

*पी–एच0 डी0 शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही, राजस्थान।
**सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही, राजस्थान।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-4044**

किसी राष्ट्र का निर्माण उस राष्ट्र में रहने वाले जनसमूह से होता है, सुसभ्य, विकसित राष्ट्र के निर्माण के लिये जनसमूह का नैतिक मूल्यों से सुसंस्कृत होना आवश्यक है। हमारा भारत राष्ट्र तो बेहद सुसभ्य और सुसंस्कृत राष्ट्रों में से एक है, हमारी भारतीय संस्कृति सनातन है, अमर है, इस दृष्टि हम भारत वासियों को सुसंस्कृत होना अतिआवश्यक है, वैज्ञानिक आपा–धापी की दौड़ में हम अपने नैतिक मूल्यों से अनजाने में ही दूर होते जा रहे हैं, अतः नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापना के लिये नैतिक शिक्षा की अति आवश्यकता है, नैतिक शिक्षा के महत्व एवं उसकी आवश्यकता का प्रतिपादन ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

नैतिक शिक्षा–एक राष्ट्रीय आवश्यकता

एक शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण उस राष्ट्र में रहने वाले लागों के माध्यम से ही संभव है। राष्ट्र के प्रति निष्ठा और प्रेम, आपसी सहयोग, अनुशासन और स्थापित नियमों के अनुसार अपना आचरण रखना अच्छे नागरिक की पहचान है। देश के लोगों में अच्छी नागरिकता की भावना उत्पन्न करना और ऐसे नागरिकों को तैयार करना जो देश की बागडोर को पूरी क्षमता के साथ अपने हाथों में ले सकें। यह प्रत्येक राष्ट्र का प्रथम कर्त्तव्य है। इस संदर्भ में देश की युवा पीढ़ी के लिये नैतिक शिक्षा की व्यवस्था करनी राष्ट्रीय आवश्यकता है। किसी देश के कमजोर नागरिक और रूग्ण मानसिकता देश को गर्त की ओर ले जाने के लिये प्रर्याप्त साधन है। हमारा देश भारत अपने भौतिक संस्थानों, नैसर्गिक सौंदर्य और ऐतिहासिक विरासत के लिये संपूर्ण विश्व में जाना जाता हैं, लेकिन हमारी आन्तरिक नैतिक कमजोरी के कारण समर्थ नागरिकता के अभाव में अन्य राष्ट्रों से हमें शोषित होने का खतरा भी सदैव बना रहता है। अतः लागों को सशक्त करना और देश को किसी भी अप्रत्याशित गंभीर सामाजिक–राजनैतिक संकट से मुक्त रखना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये।

समस्त विश्व में शिक्षा को राष्ट्र निर्माण की चारित्रिक गतिविधि के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। शिक्षाविदों का कहना है कि शिक्षा ज्ञान रूपी आलोक और आध्यात्मिक शक्ति का एक माध्यम है, जो हमारे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास यात्रा के लिये हमारी अर्न्तहित प्रकृति में आवश्यक परिवर्तन लाती है इसके लिये समाज में शिक्षा का स्तर उसकी गुणवता और व्यवस्था का उत्तम होना जरूरी है।

अच्छी शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल ही प्रदान नहीं करती अपितु मूल्यों को प्रतिस्थापित भी करती है। शिक्षार्थी की नैसर्गिक प्रवृत्तियों को प्रशिक्षित करते हुए सही द्रष्टिकोण और आदतों का निर्माण करती है, प्लेटों के अनुसार सही शिक्षा चाहे चाहे वह किसी भी रूप में क्यों न हो, शिक्षार्थी में सभ्यता और मानवीयता को प्रतिपादित करेगी।

भारतीय शिक्षा में हमेशा मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने की प्रकिया के रूप में मान्यता दी गई है। इसीलिये नैतिक और मानवीय शिक्षा हमारी शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग होना चाहिये। आज के बदलते समाज में वैश्विक अर्थव्यवस्था ज्ञान पर आधारित है। इसी संदर्भ में ज्ञान प्रदान करने वाली इकाई के रूप में शिक्षा किसी देश के विकास की प्रमुख धारा से जुड़ी हुई एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

शिक्षा मनुष्य के सामाजीकरण और नागरिकों के निर्माण की मजबुत आधारशिला है। शिक्षा समुदाय के आत्मसातीकरण, समाकलन और विकास का ठोस माध्यम भी है। ऐसा समुदाय ही देश में मूल्य और संस्कृति को सहेज कर रख पाता है। सही शिक्षा जीवन के हर पहलू तक पहुंच रखती है। अच्छी शिक्षा वह होगी जो हमारे अतीत से अच्छी बातों को निर्धारित

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

कर सके। यदि शिक्षा के उद्देश्यों की व्याख्या की जाये तो यह व्यक्ति को मुक्त करती है, जीवन को पूर्णता प्रदान करती है, साथ ही सामूहिक आत्मनिर्भरता के साथ राष्ट्रीय सुसंगता स्थापित करती हैं।

यदि हम इन अवधारणाओं को मानते हैं और नैतिक मूल्यों की स्थापना को एक राष्ट्रीय आवश्यकता बनाते हैं तो सर्वप्रथम हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को बदलना होगा और इसमें अधिकतम निवेश करना होगा। राजनैतिक इच्छा शक्ति के बिना कोई भी नीति पूर्ण रूप से कियान्वित नहीं हो पाती, चाहे नीति कितनी ही अच्छी कयों न हो। देश के राजनैतिक व्यवस्थापकों के लिये शिक्षा की आवश्यकता को समझना बहुत जरूरी हैं। शिक्षा का अर्थ केवल देश में शिक्षित लोगों का प्रतिशत बढाना नहीं है। मात्र कुछ आंकड़ो के घटने बढने को शिक्षा के प्रचार–प्रसार और उपयोगिता का सार्वभौम पैमाना नहीं माना जा सकता। बल्कि शिक्षा में सही समय पर पर्याप्त निवेश करना और सम्पूर्ण व्यवस्था को सुनियोजित करना देश की प्रथम प्राथमिकता होनी चाहिये। शिक्षा का उद्देश्य स्पष्ट और सार्थक होने चाहिये। चरित्र निर्माण के सतत् प्रकिया के रूप में चलने वाले मनुष्य जीवन की महत्वपूर्ण गतिविधि शिक्षा ही है–इसे जानना नीति निर्धारकों के लिये बहुत आवश्यक है। शिक्षा व्यवस्था के संचालन में पर्याप्त संवदेनशील तंत्र का होना व्यवस्था के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आवश्यक है।

नैतिकता देगी व्यक्तित्व को उजास

सर्वप्रथम हमें समझना चाहिये कि व्यक्तित्व का अभिप्राय क्या होता है। क्या सुंदर और स्वस्थ शरीर देखकर व्यक्तित्व का पता लगाना संभव है? क्या व्यवस्थित कपड़े पहनकर व्यक्तित्व सुन्दर बन जाता है? क्या लच्छेदार बातचीत के द्वारा प्रभावशाली व्यक्तित्व की कल्पना की जा सकती है? व्यक्तित्व का यह आंकलन एक तरफा और खंडित है। वैसे जो कहा जाता रहा है कि आगे बढ़ने की लालसा, वेशभुषा और संवाद मिलकर व्यक्तित्व का निर्माण करते है। इन तीनों तत्वों में व्यक्तित्व को बाहा अलंकरणों से आंका जा रहा है। आत्मा के विकास के साथ ही बौद्धिक विकास भी जरूरी है। बौद्धिक विकास होता है व्यापक अध्ययन से। अपने आस–पास के भौगोलिक ऐतिहासिक परम्परा का ज्ञान जितना ज्यादा होगा उसकें अन्दर आत्म विश्वास बढ़ेगा। बौद्धिक विकास का इतना ही अर्थ नहीं होता कि आपके पास जानकारी का कितना बड़ा खजाना हैं। जब व्यक्ति अपने क्षेत्र की परम्पराओं, रीति–रिवाजों और घटनाओं को समझने और उसका विश्लेषण करने की क्षमता हासिल कर लेता है, तब वह बौद्धिक रूप संपन्न होता है। इस तरह व्यक्ति में मौलिक सोच की क्षमता आ जाती है। यह मौलिकता ही व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाती हैं।

यदि हमारे पास चरित्र बल है तों हम एक दिव्य आभा से युक्त होंगे जो आत्मशक्ति का प्रतिबिम्ब होगा। हमारा स्वास्थ्य तो अच्छा रहेगा ही और अपनी कर्म शक्ति से उतना अर्जित करने में सक्षम रहेगें जितनी आवश्यकता है। अतः व्यक्तित्व विकास की नींव भारतीय जीवन मुल्यों के आधार पर खड़ी की जाए। यदि ऐसा न हो पाया तो पाश्चात्य संस्कृति भारत को भारत नहीं रहने देगी। सांस्कृतिक मुल्य ही हमें नैतिकता की और लौटायेंगे। याद रखें जो नैतिक मुल्यों का आग्रही है, उसका व्यक्तित्व अपने चरम उत्कर्ष को प्राप्त करता है क्योंकि 'अर्थ' और काम को पुरूषार्थ बनाने वाल ऋषि ने धर्म और मोक्ष की परिधि में इसे बांध दिया था।

आत्मावलोकन एवं आत्मबोध व्यक्तित्व विकास का आवश्यक अवयव है। आत्मबोध का विकास जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रभाव डालता है। यदि हमें इन बातो का अच्छा, ज्ञान हो कि खुद के व्यवहार या दुसरों की

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

प्रतिक्रियाओं से किस प्रकार प्रभावित होते हैं, तों निश्चित ही हम अपने व्यवहार को सकारात्मक रूप से परिवर्तन कर बेहतर परिणाम पा सकते है। यदि हम इस बात को समझ सकें कि हमें कौन सी बातें उन्द्वेलित करती हैं, तों हम स्वयं के व्यवहार और प्रतिक्रियाओं को नियमित और नियंत्रित कर सकतें है। यह आत्म नियमन ही व्यक्ति के विकास का आधार है।

निष्कर्ष

देश को संस्कारित, सुसभ्य, संवेदनशील और मजबूत नागरिक प्रदान करना शिक्षण संस्थाओं का मुख्य कर्तव्य है। यदि आज के युवाओं में राष्ट्र के प्रति प्रेम ही न हों, देश भक्ति का जज्बा ही न हों, समाज के प्रति दायित्वबोध न हो और उनका अपना व्यक्तित्व आचरण व्यवहार संयमित न हों, तों वे किस प्रकार अपना और अपने देश का हित कर पायेंगे। यह गंभीरता से सोचने की बात है। यदि अब हमने और अधिक विलंब किया और युवाओं को कर्तव्यबोध कराने में सफल नहीं हुये तो शायद इतिहास भी हमें माफ नहीं कर पायेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. गुप्त, नत्थूलाल, 2002, मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, नयी दिल्ली।
[2]. जैन, धर्मपाल, 2004, मूल्य आधारित शिक्षा, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष–23, अंक–1, जुलाई 2004.
[3]. नैतिक मुल्य और भाषा–म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
[4]. रचना, म.प्र. उच्च शिक्षा विभाग एवं म.प्र. हिन्दी ग्रथ अकादमी, अंक 109, जु–अगस्त 21014.
[5]. कृष्ण कपूर, हिन्दी व्याकरण तथा रचना, हेलीफेथ इण्टरनेशनल लिमिटेड, नई दिल्ली, 2002.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044